उत्तराखण्ड विद्यालयी शिक्षा परिषद्, रा

केन्द्र संख्या की मुहर	केन्द्र व्यवस्थापक के हस्ताक्षर
केन्द्र संख्या - 2039	

नोट–केन्द्र के नाम की मुहर उत्तरपुस्तिका के किसी भी भाग पर न लगाएं।

परीक्षार्थी द्वारा भरा जायेगा–

अनुक्रमांक (अंकों में)– 2 2 0 7 0 3 4 2

अनुक्रमांक (शब्दों में)– दो करोड़ बीस लाख सत्तर हजार तीन सौ बयालीस

विषय– हिन्दी

प्रश्नपत्र संकेतांक– 201(HOA)

परीक्षा का दिन– सोमवार

परीक्षा तिथि– 28/03/2022

कक्ष निरीक्षक द्वारा भरा जाय–

केन्द्र संख्या– 2 0 3 9

परीक्षा कक्ष संख्या– 0 2

उपरोक्त सभी प्रविष्टियों की जाँच मेरे द्वारा सावधानीपूर्वक कर ली गयी है।

कक्ष निरीक्षक का नाम– वन्दना

दिनांक– 28/03/2022

हस्ताक्षर कक्ष निरीक्षक– 28/03/22

प्रमाणित किया जाता है कि मैंने इस उत्तरपुस्तिका का मूल्यांकन समुचित प्रश्न–पत्र संकेतांक तथा मूल्यांकन निर्देशों के अनुसार किया है। प्राप्तांकों का मुखपृष्ठ पर अग्रसारण कर प्राप्तांकों एवं प्राप्तांकों के योग का मिलान कर लिया गया है। एवार्ड ब्लैंक में प्राप्तांकों की अंकना कर उनका पुनः मिलान भी कर लिया है। किसी भी प्रकार की त्रुटि के लिए मैं उत्तरदायी रहूँगा/रहूँगी।

परीक्षक के हस्ताक्षर एवं संख्या.....

1. अंकेक्षक के हस्ताक्षर एवं संख्या.....

2. अंकेक्षक के हस्ताक्षर एवं संख्या.....

सन्निरीक्षा प्रयोगार्थ

सन्निरीक्षा पूर्व अंक–

सन्निरीक्षा पश्चात् अंक–

त्रुटि का प्रकार–

दिनांक–

हस्ताक्षर निरीक्षक–

प्रश्न 1(क) ज्ञान राशि के संचित कोश ही का नाम साहि
है। किसी जाति की शोभा, उसकी संपन्न
उसकी मान-मर्यादा उसके साहित्य पर
ही अवलंबित रहती है।

(ख) सब तरह के भावों को प्रकट करने की योग्य
-ता रखने वाली और निर्दोष होने पर
भी यदि कोई भाषा अपना निज साहित्य
रखती है तो वह भिखारिन की तरह
समझी जाती है।

(ग) जिस जाति-विशेष में साहित्य का अभाव
या उसकी न्यूनता दिखाई दे, वह जाति
संसार में असभ्य कहलाती है। सभ्यता तथा
असभ्यता का निर्णायक एक मात्र साहित्य ही
है।

(घ) यदि साहित्य के रसास्वादन से मस्तिष्क को
वंचित कर दिया जाए तो वह निष्क्रिय
होकर धीरे-धीरे किसी काम का न रह
जाएगा। मस्तिष्क का खाद्य साहित्य है।

(ङ) शीर्षक - 'साहित्य का महत्व' या
'साहित्य और जीवन'।

PTO

प्रश्न ७.

शुद्ध पेयजल आपूर्ति हेतु पत्र

सेवा में,

सम्पादक महोदय
अमर उजाला
देहरादून (उत्तराखण्ड)

विषय – "शुद्ध पेयजल की आपूर्ति हेतु पत्र"

महोदय,

निवेदन इस प्रकार से है कि मैं आपके समाचार पत्र 'अमर उजाल' के माध्यम से अपने क्षेत्र विकासनगर में शुद्ध पेय जल की आपूर्ति के लिए नगर के अधिकारियों का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ। हमारे क्षेत्र विकासनगर में लगभग एक-दो सप्ताह पूर्व पेयजल के लिए नगर के सभी लोगों द्वारा जल विभाग के अधिकारियों को पत्र लिखा गया था, परन्तु उन्होनें इस पर कोई कदम नहीं उठाए।

हमारे नगर में एक मास से शुद्ध जल नहीं आ रहा है। मिट्टी भरे इस पानी का हम उपयोग नहीं कर सकते हैं। इसके कारण अनेक बच्चों एवं बूढ़ों में हैजा, टायफ़ाइड जैसे रोग उत्पन्न हो रहे हैं। अतः हमें शुद्ध जल के लिए बहुत दूर जाना पड़ता है।

इस कारण हमारा समय नष्ट हो रहा है। शुद्ध जल की आपूर्ति न होने के कारण पूरा नगर अस्त-व्यस्त हो गया है, विशेषकर पीने के जल की समस्या उत्पन्न हो गई है जिसके लिए हमें अपना समय तथा पैसा व्यर्थ करके बहुत दूर के दूसरे नगर जाना पड़ता है।

आशा है! आप अपने समाचार पत्र में हमारी समस्या को लिखने का प्रयास करेंगे।

धन्यवाद सहित!

दिनांक : 28 मार्च 2022

भवदीय
क.ख.ग.
282, विकासनगर
देहरादून

प्रश्न (क) सकर्मक क्रिया।

(ख) 'बालिका गेन्द से खेल रही है' में कर्म—
(ii) गेन्द

(ग) समुच्चयबोधक — इसलिए।

(घ) क्रिया विशेषण — प्रतिदिन (कालवाची क्रियाविशेषण)।

प्रश्न 5.(क) (ii) कर्मवाच्य।

(ख) राम ने धनुष तोड़ा।

(ग) अपनी-अपनी सामर्थ्य के अनुसार कार्य करो।

या

जाओ! अपनी-अपनी सामर्थ्य के अनुसार कार्य करो।

(घ)(ii) रावण ने मन्दोदरी की सलाह नहीं मानी।

6(क) अज।

(ख)(i) भास्कर।

प्रश्न 7(ii) माँ ने --- --- --- --- --- मत देना।

(ख) 'लड़की होना पर लड़की जैसी दिखाई मत देना' का अर्थ है कि माँ कन्यादान के समय लड़की को यह कहते हुए समझाती है कि तुम अपने अन्दर लड़की के कोमलतारूपी गुणों को तो अपनाए रखना परन्तु इसे कोई तुम्हारी कमजोरी समझ ले ऐसा मत होने देना क्योंकि वर्तमान समय में लड़कियों पर अनेक प्रकार के अत्याचार किए जाते हैं और वे उनका प्रतिकार भी नहीं कर पातीं।

ग) कवि – ऋतुराज
कविता का शीर्षक – 'कन्यादान।'

प्रश्न 8(ख) गोपियों ने योग की शिक्षा उन लोगों को देने की बात कही है जिनके मन चंचल हैं। वे तो कृष्ण के प्रेम में आसक्त हैं। योग अर्थात ब्रह्म कठिन व दुष्कर होता होता है। जब उद्धव गोपियों को योग की शिक्षा देते हैं तो गोपियों को वे बातें कड़वी ककड़ी के समान लगती हैं, अर्थात जिस प्रकार कड़वी ककड़ी को मुँह में रखते ही मुँह का स्वाद खराब हो जाता है उसी प्रकार गोपियो को योग की बातें कड़वी ककड़ी के समान लगती हैं। वे उद्धव को कहती हैं कि तुम योग की बातें उन लोगों को दो, जिनके चित्त चंचल हैं।

ग) भ्रमर गीत का शाब्दिक अर्थ है – भ्रमर को सम्बोधित करके गाया गया गीत। हिन्दी काव्य क्षेत्र में भ्रमर को धोखेबाज, निरंकुश तथा कली-कली पर मँडराने वाला लोलुप भी कहा गया है। अर्थात भ्रमर को इनका प्रतीक माना गया है।

उद्धव जब कृष्ण का सन्देश लेकर गोपियों के पास पहुँचे तो गोपियों ने उनका स्वागत किया लेकिन जब वे योग का सन्देश सुनाने लगे तो तभी वहाँ एक भौंरा आ गया और उड़ाए जाने

पर भी वह नहीं गया, तब गोपियों को वह काला भ्रमर श्री कृष्ण और उद्धव के समान लगा क्योंकि उद्धव भी श्रीकृष्ण का सन्देश सुना रहे थे जो गोपियों को भौंरे के गुनगुन के समान लगा।

प्रश्न 9(क) 'अट नहीं रही' कविता में सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला जी ने फागुन अर्थात बसन्त की आभा का वर्णन किया है, फागुन अर्थात बसन्त में मौसम न अधिक ठण्डा और न अधिक गर्म होता है (अन्य ऋतुओं में या तो गर्म होता है या अधिक ठण्ड)। बसन्त में चारों ओर फूलों की सुगन्ध रहती है। पत्तियाँ हरी-लाल रहती हैं, बच्चे बूढ़े, नौजवान सभी प्रसन्न रहते हैं। प्रकृति की यह सुन्दर आभा से नजरें हटती नहीं हैं। यह सम्पूर्ण धरा में समा नहीं पाती है।

पत्तियों से लदी डाल,
कहीं हरी कहीं लाल।
कहीं पड़ी थी उर में,
मन्द-गन्ध-पुष्प माल॥

(ख) परशुराम जी के क्रोध करने पर लक्ष्मण ने कहा कि- लड़कपन में तो हमने कई धनुष तोड़े थे, परन्तु तब तो आपने कभी ऐसा क्रोध नहीं किया। इस धनुष में आपकी आस्था के क्या कारण हैं? वे कहते हैं कि मेरी समझ में तो सभी धनुष

समान हैं। इस धनुष (शिवधनुष) को तो श्री राम जी ने धोखे से इ कर देख लिया और यह पुराना होने के कारण टूट गया। वे कहते हैं कि श्री राम जी ने यह धनुष धोखे से अर्थात गलती से पकड़ लिया था तो यह पुराना होने के कारण उनके इते ही टूट गया। इस प्रकार लक्ष्मण ने धनुष त टूटने के लिए इसके पुराने होने का तर्क दिया।

प्रश्न 10 (i) फादर - - - --- --- --- राह।

(क) फादर बुल्के की चिन्ता हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में देखने को थी क्योंकि वे हिन्दी से बहुत प्रेम करते थे। उन्होंने अपना शोध कार्य भी हिन्दी भाषा में ही किया था। उनके शोध का विषय रामकथा उत्पत्ति तथा विकास भी हिन्दी में था, हिन्दी उनकी रग-रग में बसा था। हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने के लिए वे अकाट्य तर्क देते थे।

(ख) हिन्दी वालों द्वारा हिन्दी की उपेक्षा करने पर वे झुँझलाते और उन्हें बहुत दुःख होता था, क्योंकि हिन्दी से वे प्रेम करते थे, उन्हें बहुत दुःख होता जब वे हिन्दी वालों के द्वारा ही हिन्दी की उपेक्षा की जाती, हिन्दी उनकी रग-रग में बसी थी, वे हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में देखना चाहते थे।

प्रश्न 11 (ख) फ़ादर बुल्के भारतीय संस्कृति के अभिन्न अंग थे। वे 47 वर्ष तक भारत में रहे। उन्होनें यहाँ मानव सेवा की। उनका जन्म वैसे तो बेल्जियम के रेम्सचैपल शहर में हुआ था परन्तु उन्होनें अपनी कर्मभूमि भारत को बनाया। वे स्वयं को भारतीय कहते थे, फादर बुल्के संकल्प से सन्यासी थे। दसियों साल बाद मिलने पर भी वे अपनत्व की भावना को अनुभव कराते थे। बड़े से बड़े दुःख में उनके मुख से सांत्वना के दो शब्द संतोष प्रदान करते थे। उन्होंने भारत को ही अपना कर्मभूमि बनाया।

उपर्युक्त कारणों से फादर बुल्के भारतीय संस्कृति के अभिन अंग थे।

(ग) बालगोबिन भगत सामाजिक मान्यताओं को नहीं मानते थे क्योंकि —

(i) पुत्र की मृत्यु के समय उन्होनें बेटे को मुखाग्नि उनकी बहु के हाथों लगवाई जबकि सामाजिक मान्यता में उन्हें यह अधिकार नहीं है।

(ii) पुत्र के अंतिम संस्कार के बाद उन्होनें अपनी पतोहू के भाई को बुलवाकर बहू की इच्छा के विपरीत उसकी दूसरी शादी करवाने का आदेश दे दिया।

उपर्युक्त कारणों से पता चलता है कि भगत

सामाजिक मान्यताओं को नहीं मानते हैं।

प्रश्न 12(क) हालदार साहब एक देशभक्त थे। वे चौराहे पर लगी सुभाष चन्द्र बोस की मूर्ति को निहारते थे।

उनके चौराहे पर रुकने के कारण निम्न थे –

(i) हालदार साहब एक देशभक्त थे, वे चौराहे पर लगी सुभाष चन्द्र बोस की मूर्ति को देखते थे।

(ii) कैप्टन की मृत्यु के बाद वे सरकंडे का चश्मा लगी मूर्ति को देखने के लिए रुका करते थे।

(iii) वे पान खाने के लिए भी चौराहे पर रुकते थे।

वे एक सच्चे देशभक्त थे और उन्हें नेताजी की बिना चश्मा वाली मूर्ति उनका अपमान लगती थी, इसीलिए वे चौराहे पर रुकते थे।

प्रश्न 12(ख) बालगोबिन भगत एक गृहस्थ साधु थे। वे गृहस्थ होते हुए भी साधुओं के समान सांसारिकता के माया-मोह, धन सम्पत्ति एवं मकड़ जाल से असम्पृक्त थे। वे कभी झूठ नहीं बोलते थे, वे दूसरों के खेत में शौच भी नहीं जाते थे, दूसरों की वस्तु

के लिए आकर्षण उनके मन में न था, कल के लिए बचाकर रखना उनका स्वभाव न था। वे जो कुछ भी बोते उसे कबीर-पन्थी मठ में चढ़ा देते और प्रसाद के रूप में जो मिलता उससे ही अपना जीवन निर्वाह करते थे।

उपर्युक्त कारणों से भगत की दिनचर्या लोगों के लिए अचरज का कारण थी।

प्रश्न 13(अ) 'जार्ज पंचम की नाक' कहानी सरकारी तन्त्र की काम न करने की मानसिकता को एवं कार्य को एक दूसरे के ऊपर टालने की मानसिकता को प्रदर्शित करता है। सरकारी तंत्र ने जिस प्रकार जॉर्ज पंचम की नाक लगाने तथा अपनी नाक बचाने के लिए एक निर्दोष व्यक्ति की नाक बुत पर लगा दी यह उनकी काम को एक-दूसरे के ऊपर टालने की मानसिकता को दिखाता है।

(ब) गंतोक को मेहनतकश बादशाहों का शहर कहा जाता है क्योंकि-

(i) गंतोक एक पर्वतीय नगर है। यहाँ पर्वतीय ऊँचे-नीचे रास्तों पर चलने में कठिन परिश्रम करना पड़ता है।

(ii) गंतोक का इतिहास इस बात की गवाही देता है।

(iii) गंतोक के नगर की प्रत्येक वस्तु यह प्रदर्शित करती है कि यह मेहनतकश बादशाहों का शहर है।

(घ) साना साना हाथ जोड़ि..... कहानी के अनुसार प्रकृति ने जलसंचय की व्यवस्था निम्न प्रकार से की है। —

(i) हिमालय के पर्वतों पर स्थित बर्फ के रूप में प्रकृति ने जल को संचय किया है जो गर्मियों में पिघलकर जल प्रदान करता है। यही जल नदियों में आता है।

(ii) प्राकृतिक झीलें, नदियाँ भी एक जलसंचय की व्यवस्था है।

(iii) भूमिगत जल के द्वारा भी हम गर्मियो में जल प्राप्त करते है।

प्रश्न 14-(क) हरिद्वारम् उत्तराखण्डस्य ऐतिहासिकं, सांस्कृतिकं, पौराणिकं, विश्वविख्यातं नगरम् अस्ति।

(ख) हरिद्वारस्य कणे-कणे भारतीया संस्कृतिः, राष्ट्रैक्य-भावः, देशस्य गरिमाबोधः च व्याप्ता सन्ति।

(घ) हरिद्वारम्, हरद्वारम्, स्वर्गद्वारम्, तपोवनं, मायाक्षेत्रं, मायापुरी, कपिलाश्रमः, कपिला च अस्यैव हरिद्वार-स्य अपराणि नामानि पुराणेषु वर्णितानि सन्ति।

प्रश्न 1८(ख) सुवर्णस्य मुख्य दुःखम् ताडनाद् तापनाद् वह्निमध्ये विक्रयाद् क्लिश्यमानो अस्ति।

(ग) जना सुवर्णं गुञ्जया / गुञ्जया तोलयन्ति।

प्रश्न 1८(क) सत्सङ्गति इति शब्दस्य अर्थः - सज्जनानां सङ्गति इति, 'सज्जनानां सङ्गति इति सत्स-ङ्गति कथ्यते।'

(ख) मुनयः शान्तिं प्राप्तुं हिमालयं गच्छन्ति,

(ग) नीरक्षीरविवेकी हंसः भवति।

प्रश्न 1७(ख) दुःखस्य विना नैव सुखस्य बोधः।

(घ) चाणक्यः चन्द्रगुप्तस्य मंत्री आसीत्।

(ङ) सज्जनानां संगति सत्संगति भवति।

(च) अहं संस्कृतं पठामि।

प्रश्न 1४(क) हरे + अव = हरेऽव
यदि + अपि = यद्यपि

(ख) स्वागतम् = सु + आगतम्।
नयनम् = ने + अनम्।

(घ) अनभिज्ञः → उपसर्ग– अन

सुशिक्षित → उपसर्ग - सु ।

प्रश्न 19 ~~युवाम् क्रीडति।~~

(i) स: पठति।

(ii) अहं विद्यालयं गमिष्यामि।

(iii) वयम् पठाम:।

(iv) राम: दशरथस्य पुत्र: आसीत्।

प्रश्न 2. जनसंख्या वृद्धि

(i) **देश में आबादी की वृद्धि दर-** भारत विश्व के बड़े देशों में से एक है। यह क्षेत्रफल की दृष्टि से एवं जनसंख्या की दृष्टि से एक विशाल देश है। यहाँ अनेक धर्मों के लोग निवास करते हैं। देश में आजादी के बाद से जनसंख्या में अत्यधिक वृद्धि हुई है। यह वृद्धि दर इतनी तेज है कि भारत विश्व का दूसरा सबसे बड़ा जनसंख्या की दृष्टि से राज्य है। अगर जनसंख्या वृद्धि इसी प्रकार होती रही तो कुछ समय बाद भारत विश्व

का पहला सबसे बड़ा जनसंख्या की दृष्टि में राज्य होगा।

जनसंख्या वृद्धि से उत्पन्न संकट —

जनसंख्या वृद्धि से निम्न संकट उत्पन्न हो रहे हैं—

(i) देश में भोजन की व्यवस्था नहीं है अर्थात भोजन की कमी हो रही है,

(ii) साथ में इतनी अधिक जनसंख्या को रहने के लिए आवास उपलब्ध नहीं है,

(iii) बेरोजगारी में अत्यधिक वृद्धि हो रही है,

(iv) जंगलो का अत्यधिक दोहन हो रहा है, जिस कारण हानिकारक प्रभाव पड़ रहा है,

(v) प्रदूषण की समस्या बढ़ रही है,

(vi) खनिजों का अत्यधिक दोहन हो रहा है,

भविष्य में जनसंख्या की स्थिति यदि भारत की जनसंख्या में इसी प्रकार तेजी से परिवर्तन होता रहा तो भविष्य में जनसंख्या में अत्यधिक वृद्धि हो जाएगी।

देश जनसंख्या की दृष्टि से विश्व में प्रथम स्थान पर आ जाएगा. जिस कारण यहाँ बेरोजगारी, आवास, खाद्य संबंधी समस्याओं से लेकर पलायन तक की समस्याएँ आ सकती हैं। जनसंख्या वृद्धि एक ऐसी समस्या है जिसे कम करने के लिए अनेक कार्य किए गए हैं परन्तु अभी भी यह नियंत्रित नहीं हो पाई है।

जनसंख्या नियन्त्रण के उपाय- जनसंख्या नियन्त्रण के निम्नलिखित उपाय निम्न हैं-

(i) शिक्षा के प्रति जागरूकता लाकर भी जनसंख्या वृद्धि को रोका जा सकता है।

(ii) सामाजिक मान्यताओं और रूढ़िवादी परम्पराओं को तोड़कर।

(iii) 'हम दो हमारे दो' के पथ पर चलकर।

(iv) बाल-विवाह को रोककर।

(v) लोगों को जनसंख्या के प्रभाव के बारे में जागरूक बनाकर।

(vi) लोगों को जनसंख्या वृद्धि के हानि बताकर।

(vii) लोगों को उचित शिक्षा देकर।

(viii) सरकार द्वारा जनसंख्या वृद्धि कम करने के लिए अनेक कानून बनाकर।

(ix) सरकार द्वारा जनसंख्या वृद्धि कम करने के लिए अनेक योजनाएँ चलाकर।

सरकार के साथ-2 हमारा भी दायित्व है कि हम जनसंख्या को बढ़ने से रोकें, ताकि देश में सभी प्रकार की सुविधाएँ हों, रोजगार बढ़े, पलायन सके रुके एवं देश प्रगति के पथ पर बढ़ता जाए, हम फिर भारत को विश्वगुरु बनाएँ।

रखना है अपने मन में दम
कि करे जनसंख्या वृद्धि को कम।